विषय-सूची

भूमिका

प्रथम अध्याय - कवि परिचय

1. महाकवि अश्वघोष : एक परिचय
2. महाकवि अश्वघोष का समय
3. महाकवि अश्वघोष के ग्रन्थ एवं उनकी प्रामाणिकता
   - 3.1 महाकवि अश्वघोष के ग्रन्थ
     - 3.1.1 बुद्धचरित महाकाव्य
     - 3.1.2 सौन्दरनन्द महाकाव्य
     - 3.1.3 शारिपुत्र प्रकरण
     - 3.1.4 राष्ट्रपाल नाटक
     - 3.1.5 वज्रसूची उपनिषद्
     - 3.1.6 गण्डीस्तोत्र गाथा
     - 3.1.7 महायानश्रद्धोत्पाद शास्त्र
     - 3.1.8 सूत्रालङ्कार
     - 3.1.9 रूपात्मक-नाटक
     - 3.1.10 गणिका विषयक नाटक
4. ग्रन्थों की प्रामाणिकता
5. महाकवि अश्वघोष का पाण्डित्य
   - 5.1 श्रुति
   - 5.2 इतिहास
   - 5.3 स्मृति
   - 5.4 दर्शन
   - 5.5 व्याकरण
   - 5.6 राजसिद्धान्तत्रयी

6. महाकवि अश्वघोष का काव्य-वैशिष्ट्य

6.1 चित्रात्मकता

6.2 अलंकार योजना

6.3 छन्द योजना

6.4 भाषा

7. महाकवि अश्वघोष का संस्कृत साहित्य में स्थान

द्वितीय अध्याय - रीति-सिद्धान्त

1. रीति शब्द से अभिप्राय

2. रीति सिद्धान्त के उद्भव का कारण

3. रीति सिद्धान्त का क्रमिक विकास

4. रीति का काव्य के अन्य प्रमुख सिद्धान्तों से सम्बन्ध

4.1 रीति और रस

4.2 रीति और अलंकार

4.3 रीति और वृत्ति

4.4 रीति और शैली

5. रीति : सिद्धान्त के रूप में

6. रीतियों के प्रकार

6.1 वैदर्भी रीति

6.2 गौडी रीति

6.3 पांचाली रीति

6.4 लाटी रीति

7. रीतियों की परस्पर श्रेष्ठता

8. रीति सिद्धान्त के अवयव

9. महाकवि अश्वघोष की कृतियों (बुद्धचरित और सौन्दरनन्द) का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से अध्ययन

तृतीय अध्याय - गुण तत्त्व

1. गुण से अभिप्राय
2. गुण का स्वरूप
3. गुण के प्रकार
   3.1 माधुर्य गुण
   3.2 ओज गुण
   3.3 प्रसाद गुण
4. गुण के अभिव्यंजक तत्त्व
   4.1 माधुर्य गुण के अभिव्यंजक तत्त्व
   4.2 ओज गुण के अभिव्यंजक तत्त्व
   4.3 प्रसाद गुण के अभिव्यंजक तत्त्व
5. गुण की दृष्टि से महाकाव्य बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय - अलंकार तत्त्व

1. अलंकार शब्द से अभिप्राय
2. अलंकार के प्रकार
   2.1 शब्दालंकार
   2.2 अर्थालंकार
   2.3 उभयालंकार
3. शब्दालंकार
   3.1 यमक
   3.2 अनुप्रास
      3.2.1 छेकानुप्रास
      3.2.2 वृत्त्यनुप्रास
      3.2.3 श्रुत्यनुप्रास
      3.2.4 अन्त्यनुप्रास
      3.2.5 लाटानुप्रास

4. अलंकार-तत्त्व की दृष्टि से महाकाव्य बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का अध्ययन

पंचम अध्याय - औचित्य तत्त्व

1. औचित्य से अभिप्राय
2. औचित्य के प्रकार अथवा औचित्य का स्वरूप
   - 2.1 रसौचित्य
   - 2.2 अलंकारौचित्य
   - 2.3 गुणौचित्य
   - 2.4 सारसंग्रहौचित्य
   - 2.5 प्रतिभौचित्य
   - 2.6 विचारौचित्य
   - 2.7 तत्त्वौचित्य
   - 2.8 भाषौचित्य
     - 2.8.1 वक्त्रौचित्य
     - 2.8.2 वाक्यौचित्य
     - 2.8.3 रसौचित्य
     - 2.8.4 क्रियौचित्य
3. भारतीय आचार्यों की दृष्टि से औचित्य का विवेचन
4. महाकवि अश्वघोष के महाकाव्य बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का औचित्य की दृष्टि से अध्ययन ।

षष्ठ अध्याय - छन्द-तत्त्व

1. छन्द का कविता के साथ सम्बन्ध
   - 1.1 पहली अवधारणा - छन्द का कविता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है ।
   - 1.2 दूसरी अवधारणा - छन्द का कविता के साथ अटूट सम्बन्ध है ।
   - 1.3 छन्द का कविता के साथ अटूट सम्बन्ध ।

2. छन्द की दृष्टि से महाकाव्य बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का समीक्षण ।

सप्तम अध्याय - शब्द-चयन

1. शब्द-चयन से अभिप्राय
2. शब्द-चयन के विषय में आचार्यों के विचार
3. शब्द-चयन की दृष्टि से महाकाव्य बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का अध्ययन

उपसंहार

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- - - - - -

संक्षिप्त-सूची

1.	अं.सा.सं.	अलंकार सार संग्रह
2.	अ.पु.का.शा.भा.	अग्निपुराण का काव्यशास्त्रीय भाग
3.	औ.वि.च.	औचित्य विचार चर्चा
4.	का.अं.	काव्यालंकार
5.	का.अं.सू.	काव्यालंकार सूत्राणि
6.	का.आ.	काव्यादर्श
7.	का.छ.प्र.	काव्य में छन्द का प्रयोग
8.	का.प्र.	काव्य प्रकाश
9.	का.मी.	काव्य मीमांसा
10.	का.शा.	काव्य शास्त्र
11.	का.शा.मा.द.	काव्य शास्त्र मार्ग दर्शन
12.	गो.स्वा.तु.	गोस्वामी तुलसीदास
13.	च.आलो.	चन्द्रालोक
14.	छ.अं.प्र.	छन्दो लंकार प्रदीप
15.	द.रू.	दशरूपक
16.	ध्वन्या.	ध्वन्यालोक
17.	नव.सा.	नव साहसांकचरित
18.	ना.शा.	नाट्यशास्त्र
19.	नि.	निरूक्त
20.	परि.भू.	परिमल की भूमिका
21.	पल्ल.	पल्लव
22.	पा.का.शा.	पाश्चात्य काव्यशास्त्र
23.	बु.च.	बुद्धचरित
24.	बु.च.भू.	बुद्धचरित की भूमिका
25.	भा.पा.का.शा.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-शास्त्र

26.	भा.प्र.	भाव प्रकाशनम्
27.	म.क.अश्व.उ.का.	महाकवि अश्वघोष और उनका काव्य
28.	र.ग.	रसगङ्गाधर
29.	रस.र.	रस रंजन
30.	रा.	रामायण
31.	वक्रो.	वक्रोक्ति जीवितम्
32.	वि.च.	विक्रमाङ्कदेव चरित
33.	वृत्त.	वृत्तरत्नाकर
34.	शा.समी.सिद्धा.	शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धान्त
35.	शै.वि.	शैली विज्ञान
36.	स.क.भ.	सरस्वती कण्ठाभरणम्
37.	सं.क.द.	संस्कृत कवि दर्शन
38.	सं.का.शा.औचि.स.	संस्कृत काव्य शास्त्र में औचित्य सम्प्रदाय
39.	सं.व्या.प्रदी.	संस्कृत व्याकरण प्रदीप
40.	सं.सा.इ.	संस्कृत साहित्य का इतिहास
41.	सं.सा.आलो.इ.	संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास
42.	सं.सा.स.इ.	संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास
43.	सा.द.	साहित्य दर्पण
44.	सा.नि.	साहित्यिक निबन्ध
45.	सा.सि.त.रू.	साहित्य के सिद्धान्त तथा रूप
46.	सु.	सुवृत्ततिलकम्
47.	सौ.	सौन्दरनन्द
48.	सौ.सा.दा.ग.	सौन्दरनन्द का साहित्यिक व दार्शनिक गवेषणा
49.	A Hist.Skt.Litt.	A History of Sanskrit Literature.
50.	Hist. Skt.Litt.	History of Sanskrit Literature.

- - - - - -

भूमिका

संस्कृत साहित्य एक विशाल साहित्य है । इसमें अनेक प्रकार का सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का वर्णन है । इस संस्कृत-साहित्य को अलंकृत करने वाले अनेक कवि हुए हैं । जिन्होंने अपनी उत्तम कृतियों से संस्कृत साहित्य को अलंकृत किया है । ऐसे कवियों में महाकवि वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, अश्वघोष तथा दण्डी आदि अनेक प्रमुख कवि आते हैं, जिन्होंने अपनी उत्तम कृतियाँ लिख कर संस्कृत साहित्य की अद्भुत वृद्धि की है । महाकवियों की इस विस्तृत परम्परा में महाकवि अश्वघोष का नाम प्रमुख रूप से आता है । इनका संस्कृत साहित्य में विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है । इनके साहित्य में अपूर्व कला-भाव एवं दार्शनिक विचारों का उदात्त एवं विरल समन्वय दृष्टिगत होता है ।

महाकवि अश्वघोष एक बौद्ध दार्शनिक कवि हुए हैं । इन्होंने लगभग दस कृतियों की रचना की है । जिनमें बुद्धचरित, सौन्दरनन्द तथा शारिपुत्र-प्रकरण विशेष प्रसिद्ध हैं । बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द दो महाकाव्य हैं । शेष शारिपुत्र प्रकरण तथा राष्ट्रपाल आदि नाटक प्रधान कृतियाँ हैं । लगभग सभी कृतियों का विषय बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है । बुद्धचरित में महात्मा बुद्ध के जीवन का वर्णन है तथा सौन्दरनन्द महाकाव्य में बुद्ध के चचेरे भाई नन्द का अपनी प्रिया सुन्दरी से मोह भंग होने पर बौद्ध-धर्म में दीक्षित होने का वर्णन है । समाहित अन्तश्चेतना से कवि ने जिन दो महाकाव्यों की रचना की है, उनमें नैसर्गिक अभिरूपता एवं सौन्दर्य विद्यमान है । वस्तुतः अश्वघोष के महाकाव्य रससिद्ध शास्त्रीय महाकाव्य हैं ।

यद्यपि बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द महाकाव्यों में कवि का धर्म-प्रचारक एवं दार्शनिक पक्ष प्रबल है, तथापि उनमें महाकाव्यात्मक उदात्तता एवं गरिमा अक्षुण्ण तथा काव्य वैभव से युक्त है । कवि की मोक्षार्थगर्भा कृतियाँ लोक-मांगलिक हैं

जो उदात्त चरित, सूक्ति, विशिष्ट रचना शिल्प तथा महदुद्देश्य एवं समुन्नत जीवन दर्शन से अनुप्राणित हैं । कवि ने सद्यः ग्राह्य न होने वाले जीवन दर्शन को काव्यों के कमनीय कलेवर में उपनिबद्ध कर अपने रसात्मक अन्तःकरण एवं काव्य सृजन-सामर्थ्य की सर्वोपरिता सिद्ध की है । जीवन की सर्वाङ्गीणता के व्यापक अनुभव एवं विस्तृत ज्ञान से व्युत्पन्न होने पर भी कवि के ये काव्य विविधोन्मुखी एवं सर्वाङ्गीण जीवन के चित्रक नहीं हो सके हैं । तथापि कवि विषय प्रतिपादन में पूर्णतः समर्थ है ।

इन महनीय काव्यों में कवि ने मानव जीवन के उदात्त मूल्यों एवं आत्मनिष्ठ जीवन के गौरवपूर्ण समुन्नयन को उद्घोषित किया है और यह सिद्ध किया है कि मानव-जीवन मात्र भोग विलास का प्रतीक नहीं है, अपितु पावक चैतन्य से परिपूर्ण निर्वाण के ज्योतिशिखर का धर्मधुरीण अधिष्ठाता है । इससे यह प्रतीत होता है कि महाकवि अश्वघोष ने अपनी रचनाओं में समस्त सांसारिक भोगविलास आदि नश्वर पदार्थों के प्रति नीरसता दिखाकर मनुष्य को उसके वास्तविक जीवन के उद्देश्य की ओर प्रेरित किया है ।

यद्यपि महाकवि अश्वघोष की कृतियों का अन्य दृष्टियों से अनुसन्धान हो चुका है, परन्तु रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से अभी अनुसन्धान नहीं हुआ था । मैंने अपने इस शोध प्रबन्ध में महाकवि अश्वघोष के महाकाव्यों (बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द) का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से अनुसन्धान किया है । इसके अन्तर्गत रीति-सिद्धान्त के उन-उन अवयवों को लक्ष्य में रख कर महाकाव्य बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का समीक्षण किया गया है जिसके कारण काव्य में विशेष प्रकार का सौन्दर्य उत्पन्न हुआ है । मैंने महाकाव्य बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से समीक्षण करने के लिए इस शोध-प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय तो महाकवि अश्वघोष के जीवन परिचय से सम्बन्धित है । इस अध्याय के अन्तर्गत महाकवि अश्वघोष का परिचय, उनका स्थितिकाल, उनके ग्रन्थ एवं ग्रन्थों की प्रामाणिकता, पाण्डित्य एवं उनके काव्यवैशिष्ट्य का वर्णन किया गया है ।

द्वितीय अध्याय शोध-प्रबन्ध के प्रमुख तत्व रीति-सिद्धान्त से सम्बन्धित है । इस अध्याय के अन्तर्गत रीति शब्द से अभिप्राय, रीति के उद्भव का कारण, रीति का क्रमिक विकास, रीति का काव्य के अन्य प्रमुख सिद्धान्तों से सम्बन्ध, रीति और शैली, रीति-सिद्धान्त के प्रमुख अवयव - गुण, अलंकार, औचित्य, छन्द तथा शब्द चयन आदि का वर्णन है ।

तृतीय अध्याय में महाकवि अश्वघोष के महाकाव्यों बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का गुण की दृष्टि से अध्ययन आता है । इसके अन्तर्गत गुण से अभिप्राय, गुणों का स्वरूप और उनके भेद, गुणों के अभिव्यंजक तत्त्व और गुणों की दृष्टि से कृतियों का समीक्षण किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में अलंकार तत्त्व की दृष्टि से महाकवि अश्वघोष की कृतियों (बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द) का समीक्षण किया गया है । इस अध्याय के अन्तर्गत अलंकार शब्द से अभिप्राय, अलंकारों का स्वरूप और उनके भेद तथा अलंकार तत्त्व की दृष्टि से बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का अध्ययन किया गया है।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत औचित्य से अभिप्राय, औचित्य के प्रकार, औचित्य का भारतीय आचार्यों की दृष्टि से विवेचन तथा औचित्य की दृष्टि से महाकवि अश्वघोष की कृतियों (बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द) का अध्ययन किया गया है ।

षष्ठ अध्याय छन्द-तत्त्व से सम्बन्धित है । इस अध्याय के अन्तर्गत क्या छन्द का कविता के साथ सम्बन्ध है या नहीं ? इसमें दोनों प्रकार की अवधारणाओं के उल्लेख के पश्चात् छन्द और कविता के अटूट सम्बन्ध पर विचार किया गया है और छन्द की दृष्टि से बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का मूल्यांकन आँका गया है ।

सप्तम अध्याय रीति-सिद्धान्त के अन्तिम तत्त्व शब्द चयन से सम्बन्धित है । इस अध्याय में शब्द चयन से अभिप्राय, शब्द चयन के विषय में आचार्यों के विचार एवं शब्द चयन की दृष्टि से बुद्धचरित तथा सौन्दरनन्द का अध्ययन किया गया है ।

इस प्रकार महाकवि अश्वघोष की कृतियों बुद्धचरित और सौन्दरनन्द का रीति-सिद्धान्त की दृष्टि से समीक्षण करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि उनके महाकाव्यों में रीति-सिद्धान्त के तत्वों का प्रयोग अच्छा प्रकार से हुआ है जिसके परिणामस्वरूप उनके महाकाव्यों में विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न हुआ है । इसका कारण यह है कि महाकवि अश्वघोष के काव्य लिखने का उद्देश्य बौद्ध-धर्म का प्रचार करना था । उन्होंने बौद्ध-धर्म के नीरस सिद्धान्तों को सरस बना कर एवं उन्हें काव्य रूप दे कर जनता को उन सिद्धान्तों के प्रति आकृष्ट करना था । जनता उनके काव्यों की ओर तभी आकर्षित हो सकती थी यदि उनके काव्यों में विशेष सौन्दर्य हो । इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महाकवि अश्वघोष ने अपने महाकाव्यों में रीति-सिद्धान्त के तत्वों - गुण, अलंकार आदि का प्रयोग किया है जिसके परिणाम स्वरूप उनके महाकाव्यों में विशेष प्रकार का चमत्कार तथा सौन्दर्य का अनुभव होता है ।

अन्त में मैं शोध निर्देशक डा॰ देवराज शर्मा जी का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने अपने कुशल निर्देशन एवं परिश्रम से इस विषय में मेरा पथ प्रदर्शन किया है । इसके अतिरिक्त डा॰ जय नारायण शर्मा, अध्यक्ष विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्कृत व भारत भारती अनुशीलन संस्थान पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर का भी धन्यवाद करता हूं । इसी संस्था में कार्यरत प्रो॰ डा॰ ब्रज बिहारी चौबे, डा॰ वीरेन्द्र शर्मा, डा॰ भास्करन् नैय्यर, डा॰ त्रिलोचन सिंह बिन्द्रा, डा॰ गरीश चन्द्र ओझा, डा॰ दामोदर झा, भूतपूर्व रीडर डा॰ मुनीश्वर देव जी एवं अन्य सभी प्राध्यापक गणों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस विषय से सम्बन्धित प्रत्येक समस्या के समाधान में सहयोग दिया है ।

इसी संस्था के भूतपूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष डा॰ शाम लाल डोगरा, श्री जगमोहन शर्मा, श्री अजीत सिंह तथा अन्य कर्मचारियों का भी धन्यवाद करता हूं जिन्होंने यथासम्भव मेरी सहायता की है ।

इसी संस्था के कार्यालय में कार्यरत श्री तरसेम लाल, श्री बृजमोहन तथा अन्य कर्मचारियों का भी धन्यवाद करना अपना कर्तव्य समझता हूं ।

जगदीश चन्द्र डी.ए.वी. कालेज दसूहा के प्राचार्य डा. कुलभूषण लाल जी तथा अन्य प्राध्यापक गणों का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस विषय से सम्बन्धित मेरी सहायता की है ।

ममतामयी पूज्य माता श्रीमती पुष्पा देवी सानन का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे धैर्य एवं आशा बंधाई है ।

जितेन्द्र मोहन

(जितेन्द्र मोहन)

. . . . . .

प्रथम अध्याय

कवि परिचय